

## जीवन का आधार है नारी

नारी जननी है, उसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है, इसको हम जानते हैं, पर स्वीकारते नहीं है, यही वजह है कि समाज में उनके प्रति सोच और नजरिया आज भी भेदभावपूर्ण है, अब महिलाओं के शिक्षित और सशक्त होने से उनकी स्थिति में पहले की अपेक्षा सुधार तो हुआ है, पर अभी भी बहुत कुछ बदलाव की जरूरत है।

**श्रीमती अर्चना जैन, सचिव- एकम्स हेल्थ एंड एजुकेशन सोसाइटी हरिद्वार**

## महिलाओं का सम्मान ही भारतीय संस्कृति

महिलाओं का सम्मान ही भारतीय संस्कृति है, यही वजह है कि कालांतर से ही सनातन संस्कृति में नारी सम्माननीय रही, सांस्कृतिक पतन के चलते ही हमारे समाज में नारी के मान-सम्मान में गिरावट आई और उसकी स्थिति दयनीय होती चली गई, अब स्थिति बदली है, पर अब भी बहुत कुछ बदलना है, समाज में महिलाओं की भागीदारी बढ़नी चाहिए, इसके लिए समाज और सरकार दोनों ही ध्यान दे रहे हैं।

**शर्मिला चौहान, एम.डी. कैरियर लॉन्चर हरिद्वार**

## भारतीय नारी के गौरव को समझना होगा

भारतीय सनातन संस्कृति में नारी का गौरवशाली अतीत रहा है। नवरात्र पर्व इसी अतीत का परिचायक है। हमें यह पर्व नारी के उस गौरव को समझने और समाज में उसे वही गौरवपूर्ण स्थान प्रदान करने के संकल्प के तौर पर मनाना चाहिए। इसके लिए सबसे पहले बेटा और बेटी के बीच भेदभाव को पूरी तरह समाप्त करना होगा। इसकी जिम्मेदारी परिवार की भी है और सरकार की भी। इसके लिए परिवार को जहां बेटा और बेटी के लिए बेहतर संस्कार देने होंगे और उन्हें भेदभाव न करने की शिक्षा भी देनी होगी।

**डॉ.मौसमी गोयल, सचिव- NGO Emach**

**प्रिंसिपल (कॉमर्स व साइंस) रामानंद इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मसी एंड मैनेजमेंट हरिद्वार**

## शक्ति स्वरूपा नारी सशक्त भी बने

माँ दुर्गा आदि शक्ति हैं, उनकी उपासना ही नारी शक्ति को स्वीकारना है। नवरात्र में उनकी उपासना तभी सार्थक है जब हम घरों में नारी को उसी रूप में स्वीकार करें और उनका सम्मान करें। नारी को भी अपने भीतर की इस शक्ति को पहचानना होगा और अपने को हर स्तर पर सशक्त बनाना होगा। इसके लिए शिक्षा के महत्व को समझना होगा और बेटियों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलानी होगी। शिक्षित बेटी जब आत्मनिर्भर बनकर जब सशक्त होगी तो समाज में उनके प्रति नजरिया अपने आप ही बदल जाएगी।

**कंचन जैन, सीईओ-अमृत आरोग्यम् Eminent Infradevelopers Pvt.Ltd.**

## महिला सशक्तीकरण से देश भी होगा सशक्त

केवल नवरात्रि पूजा और अनुष्ठान का पर्व नहीं है बल्कि नारी शक्तिकरण को मनाने का अवसर भी है। माँ दुर्गा और उनके नौ रूपों की अपार शक्ति नारी सशक्तीकरण का प्रतीक है। आज की नारी जहाँ माँ दुर्गा का रूप सजा रही है, वही सब कुछ कर गुजरने का जोश भी रखती है।

**डॉ. तन्वी अग्रवाल, एमडी- डॉ. तन्विस डेंटल हेयर एंड स्किन क्लिनिक**

**एस-44 शिवालिक नगर ऑपोजिट करिश्मा मार्ट**

## महिलाओं के प्रति हो आदर का भाव

आज भी हमारे समाज में महिलाओं के प्रति बराबरी और आदर के भाव का अभाव है। भाव का यही अभाव महिलाओं के मान-सम्मान के लिए घातक है। आदिशक्ति माँ दुर्गा की भक्ति का पर्व नवरात्र महिलाओं के मान-सम्मान को समझने और उसे आत्मसात करने का ही पर्व है। इस पर्व पर बेटियों को देवी स्वरूप में पूजना उनके प्रति सम्मान का भाव प्रकट करना है। जब घर में बेटियों का सम्मान होगा तो इसका असर समाज पर पड़ेगा।

**डॉ. पूजा अग्रवाल, संपूर्ण डेंटल केयर हरिद्वार**

## अपने दायित्वों को समझें महिलाएं

माँ दुर्गा के स्वरूप को जिसने ठीक से जान लिया, उसका उद्धार हो जाता है। नवरात्र में तो लोग नारी शक्ति को पूजते हैं, लेकिन, दुख होता है कि उसके बाद नारियों पर तमाम तरह के अन्याय करना शुरू कर देते हैं। आज के दौर में बड़े परिवर्तन की आवश्यकता है। लोगों को चाहिए कि नारियों का सम्मान करें। उनके प्रति अपनी सोच को विस्तार दें। वहीं महिलाएं भी अपने दायित्वों को समझते हुए समाज में दिशा और दशा बदलने का काम करें।

**डॉ. नीति गोयल, बीडीएस - न्यू हरिद्वार मल्टीसिटी हॉस्पिटल**

## भीतर की शक्ति को करें मजबूत

महिलाएं तो पहले से ही मजबूत हैं, उनकी शक्ति अपार है। सिर्फ दुनिया की धारणा को बदलना है। इसमें बदलाव लाना हम सभी की जिम्मेदारी है। हर महिला के भीतर माँ दुर्गा की शक्ति विराजमान है। उसे अपने भीतर की इस शक्ति को पहचानना है। नवरात्रि पर्व महिलाओं की इसी शक्ति का प्रतीक है। इस पर्व पर शक्ति की उपासना से हम अपने भीतर की शक्ति को भी मजबूत कर सकते हैं।

**डॉ. विनीता कुमार, एम.बी.बी.एस., एम.डी., नवजीवन पैथोलॉजी लैब हरिद्वार**

## अधिकारों के प्रति जागरूक होने की जरूरत

महिलाओं को अपने भीतर हिम्मत जुटाने और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की जरूरत है। महिलाएं किसी भी तरह पुरुषों से कम नहीं हैं। नवरात्र में संकल्प लेना चाहिए कि अधिकारों के साथ कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक रहेंगे। कामकाजी महिलाओं को कार्यक्षेत्र के साथ घर के दायित्वों का भी निर्वहन निष्ठा से करना चाहिए।

**डॉ. निशात अंजुम, सीनियर माइक्रोबायोलॉजिस्ट चिकित्साधिकारी-जिला चिकित्सालय व राजकीय मेडिकल कॉलेज, हरिद्वार**



## शक्तिरूपेण संस्थिता

हमारे समाज में नारी को देवी का दर्जा प्राप्त है इसीलिए उसे शक्ति स्वरूपा कहा जाता है, नारी जननी है, पालक है और प्रथम गुरु भी वही है, नारी अपनी इसी शक्ति और क्षमता के बल पर ही समाज में बराबरी का दर्जा हासिल कर रही है। नवरात्रि के पावन मौके पर आज हम शहर की ऐसी ही नौ सशक्त देवियों के बारे में बता रहे हैं जिन्होंने किसी न किसी क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई और वह अब दूसरी महिलाओं को भी सशक्त बनाने में जुटी हुई हैं।

